विचार बिन्दु

आशा प्रयत्नशील मनुष्य का साथ कभी नहीं छोड़ती। –गेटे

मशीनबुद्धि जनित साहित्यकी विश्वसनीयता को खतरा!

एआई के युग में 'साहित्य सृजन की विश्वसनीयता' विषय पर प्रमुख साहित्यकारों ने पिछले दिनों जयपुर में विद्यार्थियों के समक्ष विमर्श किया। जिस प्रकार एआई का तूफान तेज गति से सभी को घेरे जा रहा है उसमें साहित्य के लोगों का एआईजनित नई परिस्थितियों की बात करना स्वाभाविक ही था। हालांकि जिस रचनधर्मी से बातचीत की शुरुआत हुई उसका कहना था कि नई पीढ़ी एआई को सकारात्मकता से स्वीकार कर रही है तो पुरानी पीढ़ी उसके विरोध में खड़ी नज़र आती है। उसका कहना था कि जिस प्रकार गणित में पहले पहाड़े याद किये जाते थे उसकी जगह जोड़-बाकी-गुणा-भाग करने के लिए केलकुलेटर और कंप्यूटर आ गये। एआई उसी का परिष्कृत या सघन रूप है। इसे मनुष्य ने ही बनाया है। ऐसा और लोग भी सोचते हैं कि मशीन बुद्धि साहित्य को इसलिए प्रभावित नहीं कर सकती क्योंकि कंप्यूटरखुद मानव बुद्धि जैसे स्वतंत्र सोच नहीं सकता। विमर्श में मौजूद अन्य साहित्यकारों ने भी एआई की उपयोगिता को तो स्वीकारा, किन्तु उसके साहित्य और साहित्येतर खतरों के प्रति उनकी वाजिब चिंता भी थी। यह सच है कि एआई ने इस सदी की सबसे बड़ी क्रांति की है। मशीन मानव बुद्धि से अधिक तेज और बिना थके प्रदर्शन करती है। विज्ञान जगत में उसके लाभ मानव जाति के लिए जबरदस्त मददगार साबित हो रहे हैं। किन्तु विज्ञान को फेंटेसी के रूप में प्रस्तुत करते लोकप्रिय उपन्यासों और फिल्मों ने आम आदमी के दिमाग में कृत्रिम बुद्धि वाले यांत्रिक मानव बन सकने की ऐसी छवि बना दी गई है कि सभी के सिर पर यह भय चढ़ा हुआ है कि किसी दिन मशीन अनियंत्रित दस्यु बन कर मानव के विरुद्ध खड़ी हो जाएगी। लेकिन यह भी सत्य है कि एआई अब जीवन के हर पहलू में हमारी जरूरत बन गई है। आभासी दुनिया में सोशल मीडिया ने निर्बाध अभिव्यक्ति और लोगों को जोड़ने का भाव दिया था। वहां किसी का नियंत्रण नहीं होने का उत्साह था। मगर यह उत्साह शीघ्र ही बिखर गया जब देखा कि लोगों के चुनने को प्रभावित करने के लिए मशीन बुद्धि पर विश्व की बड़ी कंपनियां अरबों रुपये खर्च कर रही हैं। इन कंपनियों के कंप्यूटर प्रोग्रामरों ने मशीनों को यह भी सिखा दिया कि भाषा में भी वह मानव की तरह अभिव्यक्ति कर सके। अब मशीन अपनी कृत्रिम बुद्धि से खबरें लिख देती है, पत्र लिख देती है, निबंध लिख देती है, और यहां तक कि कविताएं और कहानियां भी लिख देती है। एआई द्वारा लिखा देना विद्यार्थियों को खूब भा रहा है, जिससे शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों को परेशानी हो रही है कि वे कैसे जांचे कि विद्यार्थी ने अपना होमवर्क खुद लिखा है या मशीन से लिखवाया है। उसी प्रकार साहित्यजगत के समीक्षकों की यह परेशानी लाजिमी है कि जो साहित्यिक रचनाएं सामने आएंगी उनकी क्या विश्वसनीयता होगी कि वह किसी रचनाधर्मी की लिखी हुई है या मशीन की उपज है। कंप्यूटर प्रोग्रामरों ने मशीन को यह सिखा दिया है कि वह कैसे शब्द चुने, कैसे वाक्य बनाये और उनमें आपसी ताल-मेल कैसा हो। मशीन ठीक-ठाक वैसा लिखने में सक्षम हो गयी है जैसा भाषा का कोई ठीक-ठाक जानकार व्यक्ति लिख सकता है।

मशीन को कंप्यूटर प्रोग्रामर उसी तरह सिखाते हैं जैसे किसी बालक को सिखाया जाता है। मगर मानव में मेधा होती है, जो मशीन बुद्धि में नहीं होती। मशीन बुद्धि का परिष्कार करने वाले लगातार इस प्रयास में जरूर लगे हैं कि मशीन मानवीय मेधा की अधिक से अधिक नकल कर सके। मगर मानव सिर्फ एक शिक्षक से ही नहीं सीखता। वह अनेक शिक्षकों तथा अपने परिवेश में मौजूद अन्य कईं चीजों से सीखता है। मशीन तो केवल आभासी दुनिया में पडे असंख्य डाटा से नकल करती है। हर एक से कुछ लेती है और लाखों से जानकारी लेकर उसे अपने को सिखाए वाक्य विन्यास में ढाल कर अपनी रचना तैयार करती है। यह कहना मुश्किल है कि मशीन ने विशिष्ट रूप से किससे क्या लिया। कहा जा सकता है कि एक रचनाकार भी उसने जो पढ़ा होता है उससे कुछ न कुछ तो लेता ही है भले ही वह उसकी वह नकल नहीं करता है। साहित्यकार के अवचेतन में पड़ी स्मृति स्पष्ट नहीं होती किन्तु उसके लेखन प्रक्रिया में वहां से भी चीजें अनेक रूपों में प्रकट होती ही है, जो मूल से बिल्कुल अलग हो सकती है। किन्तु किसी भी रचनाकार को अपनी रचना के लिए गारा-पानी वहीं से मिलता है। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि कोई साहित्यकार ऐसा भी होगा जो पढ़ता न हो। हमारे एक मित्र जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष रह चुके है एक चुटकला सुनाते हैं: हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने विश्वविद्यालय के एक शिक्षक पहुंचे। जाकर उनके चरण छूए, पास बैठे और अपने थैले से निकाल कर अपनी नई प्रकाशित पुस्तक की प्रति उन्हें भेंट करते हुए कहा 41वां पुष्प आपको अर्पण करता हूं। यह उनकी लिखी 41वीं पुस्तक थी। द्विवेदी जी ने पुस्तक ली और उसे बिना देखे अपनी बगल में रख दी और बोले, अरे वाह आपने इतनी रचनाएं कर ली। अब थोड़ा पढ़ लीजिए। यह व्यंग्य किसी भी रचनाकार के लिए गुरुवचन हो सकता है कि लिखने से पहले पढ़ना जरूरी होता है। फिर यदि मशीन भी बहुत सा पढ़ कर नया लिखती है तो परेशानी क्यों? किसी भी पीचडी की शुरुआत में ही उस के विषय पर पहले हुए अध्ययनों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना पड़ता है। इसके लिए अध्ययनकर्ता को लाइब्रेरी मंत बैठ कर यह सब करना पड़ता है। एआई के समर्थक कहते हैं कि वैसा काम कृत्रिम बुद्धि करती है। पुराने पीएचडी अध्यायन ऑनलाइन से गूगल की खोज सेवा अध्ययनकर्ता को वह सामग्री एक क्षण में खोज कर दे देती है। लेकिन इसके साथ जब थीसिस लिखने में इसी विधि से नकल होने लगी तो उसका पता लगाने के उपाय भी मशीन बुद्धि की मदद से ही किये गये।

कहानियों और कविताओं की जैसी रचनाएं अभी छप कर आ रही हैं उनसे तो मशीन बुद्धि से उत्पादित रचनाएं कमतर नहीं पड़ेंगी। कहा जाता है कि नई यांत्रिक तकनीक हमारी जरूरत पर आती है। यहीं पर धोखा हो जाता है। एआई तकनीक बाज़ार की जरूरत है। वह ग्राहक-ग्राहक के चयन को नियंत्रित करना चाहता है। यह नियंत्रण किसी बिक्री की भौतिक वस्तु के लिए हो सकता है, किसी लिए विचारधारा के लिए हो सकता है, किसी राजनैतिक सत्ता के लिए हो सकता है।

इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि अकादमिक जगत में ही नहीं साहित्य जगत में भी नकल होती रही है जिसमें कोई लेखक थोड़ा सा हेर-फेर करके या किसी और लेखक का पूरा पाठ या उसके हिस्सों को अपने लेख में समाहित कर लेता है। कोई अन्य भाषा की रचना से कुछ उठा लेता हैं। ऐसे कवि भी होते हैं जो अन्य कविताओं से आईडिया उठा लेते हैं या किसी विदेशी कविता का अपनी भाषा में चालाकी से उल्था कर लेते हैं। ऐसों को साहित्य जगत में मान्यता नहीं मिलती क्योंकि समीक्षक ओरिजिनल लेखन को बखूबी पहचानते हैं। किसी सफल लेखक की शैली में कोई और लिखे तो उसे साहित्य में गलत नहीं माना जाता। लेकिन सबको यह पता होता है कि वह किसकी शैली में लिख रहा है। चुरा कर लिखने वालों में कुछ की चवन्नी चल भी जाती है। मगर एआई उस तरह लाइनें उठा कर नकल नहीं करती। वह अंतर्जाल (नेट) पर पड़ी रचनाओं से सामान उठाती है, मगर कोई यह नहीं बता सकता कि एआई की रचना किसकी नकल है। जिस प्रकार साहित्य में नकल को रचना के उद्धरणों पर निशान लगा कर साबित किया जा सकता है कि वह नकल है उस तरह एआई की रचना को नकल के रूप में रेखांकित नहीं किया जाना दूभर है। हालांकि एआई का जिस तेजी से विकास जारी है उसमें आगे जाकर ऐसा भी संभव हो सकता है कि मशीन बुद्धि को कोई टेक्स्ट दिया जाए तो वह खोज करके यह बता दे कि वह रचना एआई से बनी है या मानवीय हाथों से लिखी गई है। जिस प्रकार बनावटी फ़ोटो को एआई पकड़ सकती है उसी प्रकार वह बनावटी मशीन लेखन को भी पकड़ लिया जाने का उद्यम हो सकता है। साहित्यकार अपने अनुभव से नई रचना करता है। उसके जितने अनुभव गहन होंगे, विस्तृत होंगे वे सब उसकी रचना को ऊंचाई देंगे। मगर ऐसा कहने वाले समीक्षक भी कम नहीं हैं कि कहानियों और कविताओं की जैसी रचनाएं अभी छप कर आ रही हैं उनसे तो मशीन बुद्धि से उत्पादित रचनाएं कमतर नहीं पड़ेंगी। कहा जाता है कि नई यांत्रिक तकनीक हमारी जरूरत पर आती है। यहीं पर धोखा हो जाता है। एआई तकनीक बाज़ार की जरूरत है। वह ग्राहक-ग्राहक के चयन को नियंत्रित करना चाहता है। यह नियंत्रण किसी बिक्री की भौतिक वस्तु के लिए हो सकता है, किसी लिए विचारधारा के लिए हो सकता है, किसी राजनैतिक सत्ता के लिए हो सकता है। वह जरूरत किन्ही उधमी समुदाय के कुटिल आनंद के लिए भी हो सकती है। वह जरूरत किसी को यह सुख देने वाली भी हो सकती है कि वह मशीन की सहायता से रचनाएं करके साहित्यकार का तमगा पा गया। इसलिए साहित्य जगत की यह चिंता वाजिब ही है कि नई परिस्थिति में साहित्यिक सृजन की विश्वसनीयता क्या रह जाएगी? ऐसे में यह मानना कि एआई रोजमर्रा की जरूरतों के दबाव में आया है सच नहीं है। यह कंपनियों के दबाव में आया है जो ग्राहक के चयन पर चतुराई से नियंत्रण चाहती हैं और जो अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए मानव की जगह मशीन की एआई से काम कराना चाहती हैं। लेखकों के लिए भी यह खतरे की घंटी है कि प्रकाशन व्यवसाय के लिए उनकी बजाय एआई से किताबें लिखवाना मुनाफे का सौदा होगा। लेकिन मानव की सृजनधर्मिता, जो एआई को बना रही है और बढ़ा रही है, वही इससे निबटने के उपाय भी देगी।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

धर्म व विज्ञान: मानव समुदाय के लिए शान्ति व सुख की तलाश

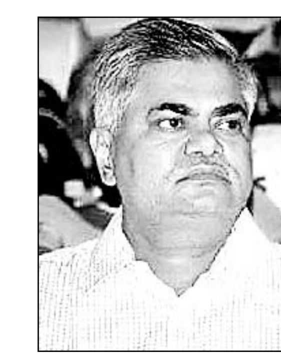

राजेश्वर सिंह

सभ्यता के आदिकाल में आदिम मनुष्य ने जब जीव, जन्तुओं व वनस्पतियों से भरी हुई पृथ्वी, सरोवर, नदी व सागर में सन्निहित विपुल जलराशि, वायुमण्डल, अग्नि तथा ग्रह, नक्षत्रों से युक्त आकाश को देखा होगा तो उसकी सम्पूर्ण चेतना विस्मय, जिज्ञासा, कृतज्ञता, अहोभाव व भय से भर गई होगी। इसीलिए वैदिक वांड्मय में प्राकृतिक शक्तियों को देवता के रूप में पूजने व उन्हें प्रसन्न करने तथा उनके प्रकोप से बचने हेतु यज्ञ परम्परा का प्रारंभ हुआ। परवर्ती काल खण्ड में वैदिक मनुष्य ने यह अनुभव किया कि समस्त प्राकृतिक शक्तियाँ एक ही परम सत्ता अथवा परम चेतना के विविध रूप हैं और यहाँ से परमात्मा अथवा परम ब्रह्म की अवधारणा अस्तित्व में आई।

मनुष्य की नियति परम सत्ता के द्वारा पूर्व निर्धारित है अथवा उस नियति का निर्धारण उसके स्वयं के हाथ मे है, इस शाश्वत, सनातन एवं चिरन्तन प्रश्न पर बहस आज तक जारी है और इसका कोई सर्वसम्मत समाधान तलाशने में मनुष्य जाति अब तक असफल रही है। मानव जीवन का उद्देश्य जीवन को सुख और शान्ति के साथ जीना है या इसका कोई अन्य परम अथवा चरम लक्ष्य भी है, इस जिज्ञासा ने स्वर्ग, नर्क, वैकुण्ठ, मोक्ष, कैवल्य व निर्वाण जैसी अवधारणाओं को जन्म दिया किन्तु यह प्रश्न भी आज तक अनुत्तिरत ही है। हिन्दू परस्परा में दु:ख की विस्मृति या अनुपस्थिति को सुख तथा सुख की निरन्तरता व अखण्डनीयता को आनन्द कहा गया है। आनन्द की यह स्थिति कल्पना है अथवा यथार्थ, इसके बारे में भी सुनिश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता।

मनुष्य के द्वारा किए गये पुण्य व पाप का उसके सुख या दु:ख से कोई संबंध है अथवा नहीं, यह भी आज तक तय नहीं हो सका क्योंकि कई बार हम पुण्यात्माओं को दु:ख भोगते हुए व पापात्माओं को सुख में लीन देखते हैं। विभिन्न धर्मों व दर्शनों में पुण्यात्मा के द्वारा अनुभव किए जा रहे दु:ख को उसकी परीक्षा अथवा पूर्वजन्म में किए गये पापों का फल कहा जाता है, जो कि पूरी तरह सन्तोषप्रद प्रतीत नहीं होता।

विभिन्न धर्मों ने परमात्मा तथा अन्य देवताओं का कृपा प्रसाद प्राप्त करने के लिए पूजा पद्धतियों का प्रणयन किया और जीवन में भाग्य तथा कर्म की भूमिका व पुण्य-पाप तथा सुख-दु:ख के संबंध को स्थापित करने के लिए कर्म व पुनर्जन्म जैसी अनेक अवधारणाएँ प्रस्तुत की जो आस्था, श्रृद्धा व विश्वास पर आधारित मान्यताएँ ही है और उनका कोई तार्किक आधार नहीं है।

संगठित धर्मों की सबसे बड़ी देन यह रही है कि चूँकि लगभग सभी-धर्म जीव व जगत का सृजनकर्ता जगदीश्वर को मानते हैं अत: यह मनुष्यों के मध्य बन्धुता तथा जीवों के प्रति करुणा का भाव उत्पन्न करता है, जिससे जीवन को अन्य प्राणियों के साथ शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व में जीना संभव हो जाता है। इसके अलावा प्रत्येक धर्म ने व्यक्ति व समाज के पारम्परिक संबंधों के विनियमन के लिए कुछ नैतिक नियमों अथवा नीतिशास्त्र का प्रणयन किया है ताकि समाज में सुख, शान्ति व सुव्यवस्था स्थापित हो सके। इन सामाजिक नैतिक नियमों के पालन को स्वर्ग व मोक्ष से भी जोड़ा गया ताकि इनको पारलौकिक आधार पर प्रतिष्ठित कर पुष्ट किया जा सके। लगभग सभी संगठित धर्मों में हरा पेड़ काटने, निर्दोष जीवों की हत्या करने, निर्बल पर अत्याचार करने, जल तथा वायु को प्रदूषित करने इत्यादि पर प्रतिबन्ध है तथा श्रम, शुचिता, परोपकार आदि पर बल दिया गया है, जो समाज में सुव्यवस्था बनाए रखने में धर्म की सकारात्मक भूमिका का परिचायक है। इसके अलावा मनुष्य के दु:ख, भय, पीड़ा, व्यथा, वेदना व मनस्ताप आदि से आक्रांत होने पर प्राकृतिक शक्तियों अथवा परम सत्ता पर भरोसा उसका हौसला नहीं टूटने देता व उसे निराशा, हताशा व अवसाद में जाने से बचाता है।

किन्तु संगठित धर्मों ने प्रत्यक्ष जीवन से पलायन कर किसी परोक्ष महत्तम लक्ष्य के लिए सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने, असीमित पूजा-पाठ, अनुष्ठान, कर्मकाण्ड में लीन रहने, कर्म से विरत होकर केवल भाग्य पर भरोसा करने, जादू-टोना, झाड़-फूंक, ढोंग, पाखण्ड व अन्धविश्वास इत्यादि कुरीतियों को प्रोत्साहन देने तथा नकली व मिथ्याचारी बाबाओं का अन्धानुकरण करने जैसी कुप्रवृत्तियों को भी प्रोत्साहित किया है, जो किसी भी स्थिति में मान्य नहीं हो सकता।

इस संबंध में एक तथ्य ध्यातव्य व ज्ञातव्य है कि आदिम मनुष्य ने जब प्राकृतिक शक्तियों अथवा परमात्मा की पूजा, प्रार्थना व उपासना प्रारंभ की, तब भी वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं यथा अन्न, वस्त्र व आवास आदि की पूर्ति के लिए केवल इन प्राकृतिक शक्तियों अथवा परमात्मा पर ही आश्रित नहीं रहा वरन उसने इस दिशा में अपना प्रयास व परिश्रम भी अनवरत व अप्रतिहत गति से जारी रखा जिसकी वजह से वर्तमान भौतिक सभ्यता आस्तित्त्व में आई।

भौतिक सुख साधन व सुविधाओं में बढ़ोतरी के लिए किए गये व किए जा रहे इन प्रयासों को ही हम विज्ञान व प्रौद्योगिकी के रूप में जानते हैं। इसके अलावा आस्था व विश्वास के जरिए जिन प्राकृतिक शक्तियों अथवा परमात्मा को हम मानते हैं, उनके रहस्य को वास्तविक, यथार्थ तथा तार्किक रूप से जानने का मनुष्य का प्रयास भी विज्ञान व प्रौद्योगिकी के माध्यम से जारी है।

किन्तु विज्ञान ने जहां मनुष्य के जीवन को सरल, सुगम व सुविधापूर्ण बनाया है, वहीं प्रकृति व पर्यावरण का विनाश, जल और वायु का प्रदूषण, शारीरिक श्रम से दूरी, असाध्य बीमारियों का उदय, भौतिक प्रगति की असीमित लालसा के चलते अवकाश का अभाव, व्यस्तता में वृद्धि के चलते मनुष्य का निरंतर बढ़ता हुआ अकेलापन, सामाजिक सम्पर्क में कमी, सामुदायिक भावना का विलोप, मनोरोग, मनोविकृति, प्राकृतिक नियमों में गैरजरूरी हस्तक्षेप इत्यादि भी इसी की देन है।

मेरी विनम्र राय में धर्म यदि मुनष्य को स्वयं में अन्तर्निहित क्षमता व संभावना को पहचानने, उसे मूर्तिमान करने हेतु कठोर परिश्रम करने, परिश्रम के अनुकूल अथवा प्रतिकूल फल को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करने, अन्य जीव-जन्तुओं, प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व एवं सामञ्जस्य में जीने तथा दीन, दु:खी, निर्बल, निर्धन व असहाय के प्रति प्रेम, करुणा, दया, सहानुभूति, सहयोग व सहायता का भाव विकसित करने में मदद करे तथा विज्ञान यदि प्रकृति व मनुष्य के मध्य अन्योनोश्रित संबंध के दृष्टिगत बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों के अनियन्त्रित, विचारहीन तथा विनाशकारी विध्वंस के बजाय मनुष्य की वास्तविक जरूरतों की पूर्ति के लिये उक्त संसाधनों के विचारपूर्ण सदुपयोग पर बल देने एवं प्राकृतिक नियमों में अनावश्यक हस्तक्षेप न कर उन नियमों के प्रति जिज्ञासा की पूर्ति के भाव को प्रबल करे तो मनुष्य का जीवन शान्ति व सुख से परिपूर्ण हो सकता है।

–राजेश्वर सिंह,
आईएएस (सेवानिवृत्त)

दो दिवसीय मारवाड़ हॉर्स शो एक फरवरी से

जोधपुर, (कासं)। 10 वां मारवाड़ हॉर्स शो 1 व 2 फरवरी को ऑल इंडिया मारवाड़ी हॉर्स सोसायटी, जोधपुर व मारवाड़ी हॉर्स बुक रजिस्ट्रेशन सोसायटी ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में महाराजा गजसिंह स्पोर्ट्स फाउंडेशन पोलो ग्राउंड, लेफ्टिनेंट जनरल एवीएम एचएच महाराजा उम्मेदसिंह एयरपोर्ट रोड पाबूपुरा पर आयोजित होगा। आयोजन के मुख्य संरक्षक पूर्व महाराजा गजसिंह होंगे।

ऑल इण्डिया मारवाड़ी हॉर्स सोसायटी के मानद सचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि मारवाड़ी हॉर्स शो का उद्घाटन शनिवार एक फरवरी को प्रात: 9.45 बजे किया जाएगा। सचिव नाथावत बताया कि प्रात: जजिंग रिंग-अदंत बछेरी, अदंत बछेरी एफएस (फाउंडेशन स्टॉक) दो दांत बछेरी जजिंग रिंग होगी। प्रतियोगिता में दोपहर में कोल्ट मिल्क टीथ, कोल्ट मिल्क टीथ एफएस, कोल्ट 2 टीथ जजिंग रिंग होगी। वहीं बग्गी प्रदर्शनी व प्रतियोगिता, मारवाड़ी हॉर्स प्रदर्शन होगा व सांय टेंट पेगिंग प्रतियोगिता प्रथम राउण्ड का आयोजन होगा।

रविवार को प्रजजन घोड़ियों की जजिंग रिंग, शो जंपिंग, मारवाड़ी अश्वों की ड्रेसाज प्रस्तुति, नर घोड़ा (स्टेलियन) जजिंग रिंग, बेस्ट अश्व प्रतियोगिता, हैक्स लेडिज हैक्स ओपन प्रतियोगिता, टैंट पेगिंग, पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन होगा। इन्दरजीत सिंह नाथावत ने बताया कि इस हॉर्स शो में देश के विभिन्न प्रदेशों के स्टडबुक द्वारा रजिस्टर्ड घोड़े भाग लेंगे व दो दिन विभिन्न अश्व प्रतियोगिताएं होंगी। उन्होंने बताया कि सात श्रेणियों में नर घोड़ा एवं प्रजनन योग्य घोड़ियों की श्रेणी में प्रथम आने वाले अश्व को एक लाख रुपए का नगद पुरस्कार व कप प्रदान किया जाएगा। द्वितीय व तृतीय आने वाले अश्व को 51 व 21 हजार की नगद राशि प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि दो दांत बछेरे-बछेरियां एवं अदन्त बछेरी व बछेरा को 51, 21 हजार व 11 हजार का नगद पुरस्कार एवं कप प्रदान किया जाएगा।

राजस्थान राज्य महिला आयोग ने अजमेर में जन सुनवाई की

संभाग के विभिन्न जिलों से आई महिलाओं ने जन सुनवाई में अपनी परिवेदनाएं प्रस्तुत की

अजमेर, (कासं)। राजस्थान राज्य महिला आयोग द्वारा सर्किट हाऊस में जन सुनवाई की गई। इसमें संभाग के विभिन्न जिलों से आई महिलाओं ने अपनी परिवेदनाएं प्रस्तुत की।

राजस्थान राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रेहाना रियाज चिश्ती ने बताया कि महिला आयोग द्वारा राज्य के समस्त संभागों पर बैठक एवं जन सुनवाई का कार्यक्रम रखा गया है। इसके अन्तर्गत अजमेर में जन सुनवाई की गई। जन सुनवाई सर्किट हाऊस में हुई। मुख्यालय एवं संभाग के जिलों से आई हुई महिलाओं ने अपनी समस्याएं रखी। इन्हें आयोग द्वारा धैर्यपूर्वक सुना गया। इन प्रकरणों पर कार्यवाही कर पीड़ित महिलाओं को राहत पहुंचाने का आश्वासन दिया गया है। उन्होंने बताया कि जन सुनवाई में पारिवारिक कलह, दहेज प्रताड़ना, सम्पत्ति विवाद, उत्पीड़न एवं बलात्कार जैसे अपराधों से सम्बन्धित प्रकरण प्राप्त हुए। आयोग के पास विभिन्न माध्यमों से प्रतिदिन लगभग 5 प्रकरण आते हैं। गत 3 वर्ष में 11609 प्रकरण प्राप्त हुए। आयोग द्वारा पूर्व के बकाया प्रकरणों को मिलाकर 25248 प्रकरण निस्तारित किए गए। वर्तमान में आयोग के पास 2564 प्रकरण प्रक्रियाधीन है। इन प्रकरणों को शीघ्र निस्तारित कर पीड़िताओं को राहत देने के लिए आयोग संकल्पबद्ध है।

उन्होंने बताया कि महिला आयोग प्रकरण के प्राप्त होते ही सक्रियता के साथ कार्य करने लगता है। आयोग के सदस्य, अधिकारी एवं न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े अधिकारी कर्मठता एवं ईमानदारी के साथ कार्य करते हैं। पीड़िता को राहत पहुंचाने के लिए प्रत्येक स्तर से सम्पर्क किया जाता है। समस्त प्रकरणों पर त्वरित न्याय दिलाने की भावना के साथ आयोग कार्य करता है। झूठा प्रकरण दर्ज करवाने वालों के विरूद्ध भी कार्यवाही करते हैं। इस अवसर पर महिला आयोग के जज बृज माधुरी शर्मा, सदस्य सुमन यादव, सदस्य सचिव विरेन्द्र सिंह यादव, उपसचिव अनिल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मीताली गर्ग एवं महिला अधिकारिता विभाग के उप निदेशक जगदीश चौधरी उपस्थित रहे।

जोधपुर एयरपोर्ट पर बड़ा हादसा टला

फ्लाइट में सवार यात्री ने फ्लाइट के इमरजेंसी गेट से छेड़छाड़ की

जोधपुर, (कासं)। एयरपोर्ट पर मंगलवार एक बड़ा हादसा टल गया। जोधपुर से बैंगलोर जा रही इंडिगो की फ्लाइट में सवार यात्री ने फ्लाइट इमरजेंसी गेट के साथ छेड़छाड़ कर दी। इसके चलते यात्री को विमान से उतारकर एयरपोर्ट थाना पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

थानाधिकारी सुरेश चौधरी ने बताया कि इंडिगो स्टाफ ने घटनाक्रम को लेकर रिपोर्ट दी है। जोधपुर में एक बैंक वर्कशॉप में आए गुरुग्राम निवासी बैंकर ने आज सुबह की बैंगलोर के लिए फ्लाइट पकड़ी थी। जोधपुर-बेंगलुरु फ्लाइट में एयर होस्टेस यात्रियों को सुरक्षा मानक बता रही थी। उस समय इमरजेंसी गेट कैसे खोलें, इसको लेकर बता रही थी। इस दौरान बैंकर ने इमरजेंसी गेट के स्वीच पर लगा फ्लैप हटाकर देखने का प्रयास किया, जिसके बाद होस्टेस ने इसकी सूचना पायलट को दी। इसके बाद फ्लाइट एसओपी के तहत यात्री को उतार दिया गया। यात्री से एयरपोर्ट सुरक्षा में लगे सीआईएसएफ ने पूछताछ की। बाद में एयरपोर्ट थाने से पुलिस एयरपोर्ट पहुंची और यात्री को थाने लेकर आए।

पुलिस ने बताया कि फ्लिप हटाने से किसी तरह का सायरन नहीं बजा था, लेकिन सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यात्री को फ्लाइट से उतारा गया था। पुलिस के अनुसार फ्लाइट में जिसने यह हरकत की है वो निजी बैंक में अधिकारी हैं। उनका नाम सिराज किदवई है। यात्री इंडिगो की फ्लाइट से जोधपुर से बेंगलुरु जा रही थी। जानकारी मिलते ही एयरपोर्ट थाना पुलिस पहुंची और बैंक अधिकारी को स्थानीय थाने ले जाया गया। थानाधिकारी सुरेश चौधरी ने बताया कि फ्लाइट सुबह 10 बजकर 05 मिनट पर एयरपोर्ट से रवाना होने वाली थी, लेकिन करीब 20 मिनट की देरी से रवाना हुई।

एक बाल श्रमिक मुक्त करवाया

भीलवाड़ा, (निसं)। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा संचालित बाल श्रम की रोकथाम हेतु संचालित पेन इंडिया रेस्क्यू अभियान के तहत श्रम विभाग, मानव तस्करी विरोधी इकाई एवं बाल अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 ने बाल श्रम मुक्त अभियान के तहत रोडवेज बस स्टैंड क्षेत्र में स्थित होटल, ढाबों एवं रेस्टोरेंट पर बाल श्रम नहीं रखने हेतु शपथ पत्र भरवाए एवं पोस्टर चस्पा किए। इस दौरान सिटी कोतवाली पुलिस स्टेशन क्षेत्र में स्थित अजमेरी चाट से एक बाल श्रमिक को मुक्त करवाया। मुक्त करवाए गए बालक को बाल कल्याण समिति सदस्य विनोद राव के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बाल कल्याण समिति के आदेशानुसार बालक को एवरेस्ट शेल्टर होम में आश्रय हेतु रखवाया गया। इस अभियान के दौरान श्रम विभाग के श्रम निरीक्षक अशीष यादव एवं श्रम निरीक्षक शिवप्रसाद चौधरी, मानव तस्करी विरोधी इकाई के प्रभारी शौकत हुसैन, हेड कांस्टेबल मुकेश पारीक एवं बाल अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक धर्मराज प्रतिहार के निर्देशानुसार परियोजना समन्वयक हेमंत सिंह सिसोदिया, काउंसलर निर्मला पुरोहित, सुपरवाइजर आनंद सुनारिया मौजूद रहे।

गौशाला की आड़ में हो रहे अतिक्रमण को हटाया

45 बीघा सरकारी भूमि पर कब्जा था, 35 बीघा जमीन मुक्त कराई

- **प्रशासन ने अतिक्रमण हटाने के लिए सात जेसीबी मशीनों का इस्तेमाल किया**
- **गौशाला के नाम पर कृषि कार्य में इस्तेमाल ली जा रही थी भूमि**

भीलवाड़ा, (निसं)। विधानसभा में जहाजपुर में गौशाला की आड़ में सरकारी भूमि पर हो रहे अतिक्रमण के सवाल पर प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए 35 बीघा सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया।

उपखंड अधिकारी राजकेश मीणा ने जानकारी देते हुए बताया कि विधानसभा में अतिक्रमण से संबंधित प्रश्न उठाया गया था जिसमें प्रशासन ने पूर्व में दो जगहों पर कार्रवाई की थी। आज पूर्व तैयारी के बाद तीसरी जगह भी अतिक्रमण को हटाया गया है। गौशाला के नाम पर कृषि कार्य में इस्तेमाल ली जा रही थी, उसको अतिक्रमण मुक्त करवाया गया है। गौशाला समिति प्रबंधन को भी हमने गौशाला भूमि आवंटन के लिए निर्देश दिए हैं। तहसीलदार रवि कुमार मीणा ने बताया कि 45 बीघा सरकारी भूमि पर अतिक्रमण था जिसमें से लगभग 35 बीघा सरकारी भूमि से अतिक्रमण हटा दिया गया है।

प्रशासन ने अतिक्रमण को हटाने के लिए सात जेसीबी मशीनों को इस्तेमाल में लिया, जो तकरीबन दो घंटे तक चली। इस दौरान भारी पुलिस बल व प्रशासन के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। पुलिस उपाधीक्षक नरेंद्र पारीक, थानाधिकारी सुनिल ताड़ा मय जाब्ते के एवं प्रशासनिक कार्मिकों में पटवारी, गिरदावर व नगर पालिका के कार्मिक भी मौजूद रहे।

राशिफल

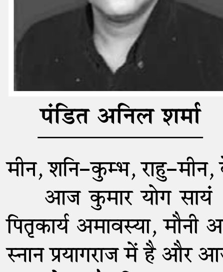

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 29 जनवरी, 2025

माघ मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, बुधवार, विक्रम संवत 2081, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र प्रात: 8:21 तक, सिद्धि योग रात्रि 9:21 तक, नाग करण सायं 6:06 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग सायं 6:06 से प्रात: 7:15 तक रहेगा। आज देव पितृकार्य अमावस्या, मौनी अमावस्या और आज कुम्भ महापर्व मुख्य शाही स्नान प्रयागराज में है और आज द्वापर युगादि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:19 से 12:40 तक, चर 3:21 से 4:41 तक, लाभ 4:41 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 6:02

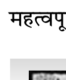

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

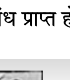

सिंह

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

कन्या

व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

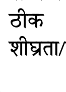

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

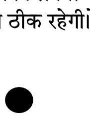

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

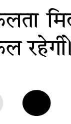

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।